अंग दूसरा - होली ॥ शब्द १ ॥ होली खेलूँगी सतगुरु साथ	
हिंदी	संस्कृत
होली खेलूँगी सतगुरु साथ । सुरत मन चरन लगाई ॥ १ ॥	क्रीडिष्यामि होलीं सद्गुरुणा सह । अयुङ्क्ताम् आत्मामनसी च चरणौ ॥ १ ॥
करम जाल को जार । भरम की धूल उड़ाई ॥ २ ॥	प्रज्वल्य कर्मपाशम् उड्डीना भ्रमधूलिः ॥ २ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय । शब्द का रंग बहाई ॥ ३ ॥	उड्डयित्वा सद्गुणानां रक्तचूर्णम् अप्रवाहयत् शब्दस्य रङ्गम् ॥ ३ ॥
प्रेम नशे में चूर । चरन गुरु रहूँ लिपटाई ॥ ४ ॥	उन्मत्ता प्रेम्ण:मदे लिप्लिम्पामि गुरुचरणयोः ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन पुकार । जगत में धूम मचाई ॥ ५ ॥	आह्वानं कृत्वा सद्गुरोः वाचः जगति कृत: कोलाहलः ॥ ५ ॥
रा धा/ध: स्व आ मी महिमा गाय । सरन में निस दिन धाई ॥ ६ ॥	गीत्वा रा धा/ध: स्व आ मी महिमानम् धाविता शरणं प्रतिदिनम् ॥ ६ ॥
रा धा/ध: स्व आ मी नाम सुनाय । काल से जीव बचाई ॥ ७ ॥	श्रावित्वा रा धा/ध: स्व आ मीनाम रक्षित: जीवः कालात् ॥ ७ ॥

Prembani Bhag 3 : शब्द ११-उलट पलट कर खेली होली ।	
हिंदी	संस्कृत
उलट पलट कर खेली होली । अनहद धुन घट अंतर बोली ॥१॥	अस्तव्यस्तीभूय खेलिता होली । घटेऽन्तसि प्रकटितानहदध्वनि: ॥१॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का। गुरु पर डाला भर भर झोली ॥२॥	उत्साहस्याबीरं प्रेम्ण: रक्तचूर्णम् । गुरौ अर्पितं पूरयित्वा वस्त्रपुटकी ॥२॥
मन और सुरत चढ़े गगना पर माया ममता घट से डोली ॥३॥	आत्मामनश्चारोहतां गगने । माया ममता चाभूतां पृथग्घटात् ॥३॥
गुरु दरशन कर हुई मगनानी। अब नहिं देत काल झकझोली ॥४॥	गुरुदर्शनेन मग्नाभूता । काल: झटितुं न शक्यतेऽधुना ॥४॥
आगे चढ़ पहुँची दस द्वारे । सुन्न शहर की धुन लई तोली ॥५॥	अग्रे आरुहय गतं दशद्वारम् । ज्ञातासुन्नपदस्य ध्वनि: ॥५॥
भँवरगुफा सतलोक अटारी । चढ़ के चली अब शब्द खटोली ॥६॥	भँवरगुहा सतलोके च क्षौमौ । शब्दवाहनेन गतवान् ॥६॥
अलख अगम के पार चढ़ाई । रा धा/ध: स्व आ मी चरन अब मिले अमोली ॥७।।	अलखागममतिक्रम्य पारं आरोहितम् । प्राप्तः बहुमुल्य रा धा/ध: स्व आ मीचरणौ ॥७।।

॥शब्द १२॥ सुरत रँगीली खेलत होरी ।	
हिंदी	संस्कृत
सुरत रँगीली खेलत होरी । प्रेम लगन गुरु चरनन जोड़ी ॥१॥	रसिकात्मा होलिका खेलति । सद्गुरुचरणयोः प्रेम्णा युनक्ति ॥१॥
केसर रंग प्रीति भर घट में । बार बार पिचकारी छोड़ी ॥२॥	पिण्याकवर्णस्य प्रीतिं धार्य हृदि। भूयोभूयः प्रोक्षणिकयावकीर्यते ॥२॥
भींज रहे सतगुरु सतसंगी। उमँग बढ़त धुन शोर मचो री ॥३॥	आर्द्राः सद्गुरुः सत्संगीजनाःच । उत्साहं वर्द्धते ध्वनेराधिक्यम् ॥३॥
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस। शब्द संग मन नाच नचो री ॥४॥	उत्क्षिपति अबीरं रक्तचूर्णञ्च चतुर्दिक् । शब्देन सह नृत्यति मनः ॥४॥
गुरु दरशन अद्भुत हिये निरखत । सुरत हुई मस्तानी बौरी ॥५॥	अद्भुतगुरुदर्शनं निरूप्य हृदि । आत्माजातः मत्तोन्मत्तः ॥५॥
अजब बिलास लखा घट माहीं । सुफल जन्म मेरा आज भयो री ॥६॥	अद्भुतविलासः घटे अपश्यत् । जन्मसफलं जातं ममाद्य ॥६॥
माया नार रही शरमाई। काल करम बल आज थको री ॥७॥	मायानारीं जाता लज्जा । कालकर्मणोः च बलं गतमद्य ॥७॥
आरत कर गुरु प्रेम बढ़ाती । चरन सरन गुरु धार रहो री ॥८॥	आरतिंकृत्य वर्द्धयति स्नेहम् । सद्गुरोः चरणशरणं धरेत ॥८॥
ऐसा फाग भाग से पइये । जन्म मरन सब दूर भयो री ॥९॥	ईदृशः फाल्गुनःसुभाग्यात् प्राप्यत । जन्ममरणयोः चक्रं गतम् ॥९॥
धन धन भाग मेरे अब जागे । रा धा/धः स्व आ मी मोहि निज दान दियो री ॥१०॥	धन्याः जागृताः मम भागाः । दत्तं दानं रा धा/धः स्व आ मी-दयालवः मह्यम् ॥१०॥
प्रेम अंग प्यारी सुरत नवेली । रा धा/धः स्व आ मी प्यारे से आज मिलो री ॥११॥	प्रियनवात्मा प्रेम्णा अंगेन । युज्यत् रा धा/धः स्व आ मी प्रियैः सह ॥११॥

प्रेमवानी ।।। / शब्द 13 होली खेलत सतगुरु नाल।	
हिंदी	संस्कृत
होली खेलत सतगुरु नाल। पिरेमी सुरत रँगीली ॥१॥	होलिका खेलति सद्गुरुणा सह । प्रेम्ण: युक्त: रसिकात्मा ॥१॥
प्रेम प्रीति की केसर घोली । गुरु पै सन्मुख डाल ॥२॥	प्रेमप्रीत्या केसरं अविलयत् । गुरुसमक्षं अवकीर्यते ॥२॥
बरषत रँग भींजत सुत संगी। चढ़त गगन पर हाल ।।३।।	रंगस्यवृष्टि:सहैव आत्मार्द्र: । गगने आरोहति सद्य: ।।३।।
काल कला सब थकित हुई अब। काटा माया जाल ।।४।।	कालचातुर्य समाप्तमद्य । मायाजालं अच्छिनत् ।।४।।
गुनन गुलाल उड़ावत मग में। सुरत अबीर भर थाल ।।५।।	गुणानां रक्तचूर्णमुत्क्षिपति गगने । आत्माबीरेणापूरयत स्थलम् ।।५।।
गुरु बल सुरत छड़ी घर चाली। पहुँची हंसन ताल ॥६॥	गुरुबलेन पृथग्भूयात्मा गत: निजगृहम् । गतं मानसरोवरस्थलम् ॥६॥
परम पुरुष के दरशन पाये। सत्त शब्द पाया धन माल ॥७।।	प्राप्तं परमपुरुषस्य दर्शनम् । सत्तशब्दस्य सम्पत्ति: प्राप्ता ॥७।।
रा धा/ध: स्व आ मी चरन सरन दृढ़ धारी। मुझ पर हुए हैं दयाल ।।८।।	रा धा/ध: स्व आ मी चरणयो: धृतं दृढ़शरणम् । मयि संजाता: दयालु: ।।८।।
भक्ति दान मोहि फगुआ दीन्हा । मेटे सब दुख साल ।।९।।	भक्तौ फाल्गुनमान: दत्त: मह्यम् । सर्वे कष्टा: अपसारयन् ।।९।।

शब्द १५- फागुन की ऋतु आई सखी	
हिंदी	संस्कृत
फागुन की ऋतु आई सखी । आज गुरु सँग फाग रचो री ॥ १ ॥	फाल्गुनऋतु: आगत: सखी । अद्य गुरुणा सह खेल फाल्गुनम् ॥ १ ॥
ऐसा समा मिले नहिं कबहीं । मनुआँ उमँग रहो री ॥ २ ॥	ईद्दगवसर: न प्राप्स्यति कदापि । मन: उत्साहेन युनक्ति ॥ २ ॥
दृष्टि जोड़ ताको गुरु मूरत । अद्भुत रूप लखो री ॥ ३ ॥	दृष्टिं युज्य पश्य गुरुस्वरूपम् । अवलोकयाद्भुतं रूपम् ॥ ३ ॥
सुरत अबीर की भर भर झोली । घट घट रंग भरो री ॥ ४ ॥	आत्माबीरस्य वस्त्रपुटकं पूरयित्वा । रंगेन प्रतिघटं व्याप्तं कुरु ॥ ४ ॥
गुरु सँग खेल आज नई होली । जग बिच धूम मचो री ॥ ५ ॥	गुरुणा सहाद्य खेल होलिकानवा । जगति कोलाहलं जायते ॥ ५ ॥
ऐसी होली खेलो मेरे भाई । करम भरम सब दूर करो री ॥ ६ ॥	ईद्दशी होलिका खेल मम भ्राता । कर्मभ्रमाश्च सर्वे अपनय ॥ ६ ॥
रा धा/ध: स्व आ मी चरन ध्यान धर हिये में। जग से आज तरो री ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी चरणौ घटे धार्य । अद्य जगत: पारं गच्छ ॥ ७ ॥
होय निहाल जाय जग पारा । चरनन सुरत धरो री ॥ ८ ॥	पूर्णसंतुष्टीभूय गच्छे जगत: पारम् । चरणौ आत्मा युङ्ग्धि ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥ मैं तो होली खेलन को ठाड़ी ।	
हिंदी	संस्कृत
मैं तो होली खेलन को ठाड़ी । स्वामी प्यारे झटपट खोलो किवाड़ी ॥१॥	अहन्तु होलिका क्रीडितुं सन्नद्धा। क्षिप्रमनावर्तयतु कपाटं स्वामी ।।१।।
प्रेम रंग की बरषा कीजे । भींजे सुरत हमारी ॥ २ ॥	प्रेमरंगस्य वृष्टिं कुर्यात् । आत्मा आर्द्रः भवति मे ॥२।।
देर देर बहु देर भई है । कहाँ लग करूँ पुकारी ॥ ३ ॥	प्रतीक्षां कुर्वनति विलम्बं जातम् । कियत् पर्यन्तं आह्वयामि ।।३।।
तड़प तड़त जिया तड़प रहा है। दरशन देव दिखा री ॥ ४ ॥	विरहं विरहं कृत्य दहति हृदयम् । दर्शनं देहि प्रभुवर ।।४।।
सुन्दर रूप लखूँ अद्भुत छवि । होवे घट उजियारी ॥ ५ ॥	ईक्षेऽहं रम्यरूपमद्भुतस्वरूपम् । भवेत् हृदि प्रकाशम् ।।५।।
ऋतु फागुन अब आय मिली है। नई नई फाग खिला री ॥ ६ ॥	सम्प्राप्ता फाल्गुनऋतुः । विकसन्ति नवाः फाल्गुनस्योपादानाः ।।६।।
रा धा/ध: स्व आ मी परम दयाला । चरनन लेव मिला री ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मी दयालवः । चरणयोः भवेयं लयलीनाः ।।७।।
बिनती करूँ दोऊ कर जोड़ी। कर लो प्रेम दुलारी ॥ ८ ॥	करौ बद्धवा करोम्यहं प्रार्थनाम् । कुर्यात् माम प्रेममग्नः ॥८।।

॥ शब्द १७ ॥ होली खेलत सतगुरु संग ।	
हिंदी	संस्कृत
होली खेलत सतगुरु संग । पिरेमन रंग भरी ॥ १।।	होलिकां खेलति सद्गुरुणा साकम् । प्रेममग्ना स्नेहीनारी ॥ १।।
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस। भर भर डालत रंग ॥ २ ॥	रक्तचूर्णमबीरं प्रक्षिपति चतुर्दिक्। पूरयित्वावकीर्यते रंगम् ॥ २ ॥
पाँच तत्त पिचकारी छोड़ी। गुन तीनों हुए तंग ॥ ३ ॥	पंचतत्त्वानां प्रोक्षणिका प्रक्षिप्ता। खिन्ना: भूता त्रिगुणाः ॥ ३ ॥
मन इंद्री को नाच नचा कर। करत काल से जंग ॥ ४ ॥	मन: इन्द्री: नर्तयित्वा नर्तयित्वा । करोति कलहं कालेन सह ॥ ४ ॥
सतगुरु प्रेम धार हिये अंतर। गुरु का सीखी ढंग ॥ ५ ॥	सद्गुरुप्रेम धार्य हृदन्तसि। गुरोरादर्शं अवबोधितवती ॥ ५ ॥
मेहर करी गुरु चरन लगाया। फूल रही अँग अंग ॥ ६ ॥	कृपां कृत्य गुरु: चरणौ संलग्ना । प्रफुल्लितानि प्रत्यंगानि ॥ ६ ॥
रा धा/ध: स्व आ मी महिमा नित हिय जिय से। गावत उमँग उमंग ॥ ७ ॥	रा धा/ध: स्व आ मीमहिमां नित्यं हृदात्मना। गायत्युत्साहेन युक्ता ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥ सुरत प्यारी खेलन आई फाग	
हिंदी	संस्कृत
सुरत प्यारी खेलन आई फाग । धार गुरु चरनन में अनुराग ॥१॥	फाल्गुनं खेलितुमागतः प्रियात्मा । धार्य गुरुचरणयोरनुरागम् ॥१॥
प्रेम रंग भर भर लई पिचकार । छोड़ती चहूँ दिस उमँग सम्हार ॥२॥	प्रेम्णारंगेन प्रोक्षणिकां पूरयित्वा। उत्साहेनावकीर्यते चतुर्दिक् ॥२॥
सुरत का लाई अबीर गुलाल । चरन गुरु कुमकुम भर भर डाल ॥३॥	आत्मामबीररक्तचूर्णं च कृत्वा। गुरुचरणयोः कुमकुमं पूरयित्वा प्रक्षिपति ॥३॥
काम और क्रोध उड़ाई धूर । करम और भरम किये सब दूर ॥४॥	कामक्रोधयोश्च रेणुः उड्डापयति। कर्मभ्रमाश्च सर्वे अपसारिता: ॥४॥
गाल दे काल हटाया हाल । दया ले काटा माया जाल ॥५॥	अपशब्दादपसारितः कालः सद्य:। दयां धार्य मायाजालं छिन्नम् ॥५॥
सुरत अब चढ़ती गगन मँझार । करत वहाँ गुरु से हेत पियार ॥६॥	आत्माधुनामारोहति गगनमध्ये। करोति तत्र गुरुणास्नेहम् ॥६॥
मिली सतगुरु से जा सतलोक । अलख और अगम का पाया जोग ॥७॥	सत्तलोके सद्गुरुणा मिलितः। अलखागमाभ्यां योगं कृतवान् ॥७॥
चरन रा धा/ध: स्व आ मी कीना प्यार । प्रेम का फगुआ लीना सार ॥८॥	रा धा/ध: स्व आ मी चरणौ कृतं स्नेहम् । प्रेम्ण: फाल्गुनमान: स्वीकृतवान् ॥८॥

शब्द २१ - गुरू सँग खेलन फाग चली	
हिंदी	संस्कृत
गुरू सँग खेलन फाग चली । खिलत मेरे घट में कँवल कली ॥ १ ॥	सद्गुरुणा सह फाल्गुनं खेलितुं सन्नद्धः । विकसति मम घटे कमलकलिका ॥१॥
जोत की लई पिचकार सम्हार । शब्द रँग बरषा होत अपार ॥ २ ॥	ज्योतेः प्रोक्षणिका गृहीतावधानेन । शब्दरंगस्य जाता वृष्टिरपारा ॥२॥
चाँद और सूरज कुमकुम लाय । बिमल घट त्रिकुटी रंग भराय ॥ ३ ॥	चन्द्रसूर्यौ कुमकुमं प्रापयतः। विमलघटः त्रिकुटीरंगने पूरितः ॥३॥
सुन्न में भरती सुरत अबीर । महासुन चढ़ती धर कर धीर ॥ ४ ॥	सुन्नपदे पूरयति अबीरम्। महासुन्नपदे आरोहति धैर्येण ॥४॥
भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय । सत्तपुर होली खेली जाय ॥ ५ ॥	भँवरमारुह्य बीनवाद्यमनदत् । सत्तपुरे गत्वा खेलिताहोलिका ॥५॥
आरती गाई हंसन संग । धारिया सत्तपुरुष का रंग ॥ ६ ॥	हंसैः सार्द्धं आरतिः गीता । सत्तपुरुषस्य रंगं धृतम् ॥६॥
उमँग कर रा धा/धः स्व आ मी धाम चली । सरन गह रा धा/धः स्व आ मी चरन रली ॥ ७ ॥	उत्साहेन गतवती रा धा/धः स्व आ मीधामम् । शरणं गृहीत्वा रा धा/धः स्व आ मीचरणयोः लयलीनः॥७॥

॥ शब्द २४ ॥ आज गुरु खेलन आये होरी ।	
हिंदी	संस्कृत
आज गुरु खेलन आये होरी । जग जीवन का भाग जगो री ॥१॥	अद्य गुरुःखेलितुमागता: होलिकाम् । जगजीवनस्य भाग्यं जागृतम् ॥१॥
प्रेम घटा अब बरसन लागी । धारा रंग बहो री ॥२॥	वर्षति प्रेमघटा अधुना । रंगस्य धारा: प्रवहन्ति ॥२॥
सुरत अबीर घुमँड़ रहा चहुँ दिस। मनुआँ उमँग रहो री ॥३॥	आत्माबीर: घूर्ण्णित: चतुर्दिक् । मनोत्साहित: भवति ॥३॥
घंटा संख मृदंग बाँसरी । सारँग बीन बजो री ॥४॥	घंटाशंखमृदंगवेणु: । सारंगाहितुण्डवाद्यानि नदन्ति ॥४॥
हरख हरख सब गिरते चरनन । प्रेम भक्ति गुरु दान दियो री ॥५॥	हर्षितं भूय: सर्वे पतन्ति चरणयो: । प्रेमभक्तेश्च दानं दत्तवन्त: सद्गुरु: ॥५॥
काल करम का दाव चुकाया । खोल दई माया की चोरी ॥६॥	कालकर्मणो: उऋणं कृतवन्तौ । अपिहितं मायाया: चौर्यम् ॥६॥
करम भरम तज जीव सुखारी । पकड़ शब्द निज घर को दौड़ी ॥७॥	कर्मभ्रमं त्यक्त्वा जीवा: सुखिन: । शब्दं ग्राह्य निजगृहम् अधावत् ॥७॥
अस लीला कहो कौन दिखावे । रा धा/ध: स्व आ मी दाता दया करो री ॥८॥	ईदृशी लीलां क: दर्शितुं क्षम: । रा धा/ध: स्व आ मीदाता दयां कुर्यु: ॥८॥

॥ शब्द २६ ॥ सुरत सिरोमन फाग रचाया।	
हिंदी	संस्कृत
सुरत सिरोमन फाग रचाया। सब जुड़ मिल आज खेलो री होरी ॥टेक॥	आत्माशिरोमणिः रचितं फाल्गुनम् । सर्वे मिलित्वाद्य क्रीडन्तु होलिकाम् ॥टेक॥
सखी सहेली घूमत आईं । अबीर गुलाल रंग भर लाईं। गुरु दरशन को धूमत धाईं । देख रूप झूमत मुसक्याईं । मान मनी की मटकी फोड़ी ॥ १ ॥	सखीजनवयस्याः भ्रमणनागताः। अबीररक्तचूर्णरंगं पूर्णं कृत्यागताः। गुरुदर्शनाय परिक्रमन् अधावन्। स्वरूपं दृष्ट्वा उन्मत्तीभूयः स्मिताः । मनसः अहंकारस्य घटम् अत्रोटयत ॥ १ ॥
सतगुरु परम उदार कृपाला । देख दीनता हुए दयाला । बचन सुनाये अजब रसाला । दया दृष्टि से किया निहाला । अटक भटक सब अब दई तोड़ी ॥ २ ॥	सद्गुरुः परमोदारः कृपालुः। दैन्यं दृष्ट्वा दयालुसंजातः। रसिकानि प्रवचनानि अश्रावयत्। दयादृष्ट्या कृतार्थम् अकरोत् । गत्यवरोधाः सर्वे ध्वस्ताः॥ २ ॥
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावत । रूप अनूप हिये में ध्यावत । उमँग उमँग गुरु आरत गावत । शब्द भेद ले जुगत कमावत । चढ़त अधर गह धुन की डोरी ॥ ३ ॥	गुरुचरणयोः प्रेमवर्धयति । अप्रतिमं स्वरूपं हृदये ध्यायति । उत्साहेन गुरुआरतिं गायति । शब्दभेदेन युक्तिं अर्जयति। ध्वनेः सूत्रं गृहीत्वा अधरमारोहति ॥ ३ ॥
धूम मची अब धरन गगन में। रा धा/धः स्व आ मी खेलत फाग अधर में ।। भींज रहे सब प्रेम रंग में । सुध बिसरी रच रही धुनन में । आज अनोखा फाग रचो री ॥ ४ ॥	धरणि गगने अधुना कोलाहलम्। अधरे रा धा/धः स्व आ मी क्रीडति फाल्गुनम्। क्लिद्यन्ते सर्वे प्रेम्णः रंगे। स्मृतिः विस्मृताः लीना भवति ध्वनिषु। अद्याद्भुतं फाल्गुनं रचितम् ॥ ४ ॥

प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस	
हिंदी	संस्कृत
प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस। होली खेलन आई सूरत प्यारी ॥१॥	प्रेमरंगस्य वृष्टिः चतुर्दिक् । होलीखेलितुमागता प्रियात्मा ॥१॥
लिपट रही गुरु चरनन हित से। भींज रही घट अंतर सारी ॥२॥	युनक्ति गुरुचरणयोः हितेन। आर्द्रा भवति घटे अन्तसि च ॥२॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग में । पँच इंद्री छोड़ी पिचकारी ॥३॥	गुणानां रक्तचूर्णं उत्क्षिपति मार्गे। पंचेन्द्रियाणां प्रोक्षणिकया अवकीर्यते ॥३॥
भर भर सुरत अबीर झुकावत । गुरु सन्मुख अब कुमकुम मारी ॥४॥	पूर्णपाणिनाबीरं प्रस्तौति। गुरुसमक्षं कुमकुमं प्रक्षिपति ॥४॥
जगत भोग की धूल उड़ाई । लाज कान कुल की तज डारी ॥५॥	जगद्भोगानां रेणुं उत्क्षिपति। कुलस्य मानमर्यादा त्यक्ता ॥५॥
काल करम सिर धौल मार कर । माया नटनी की चादर फाड़ी ॥६॥	कालकर्मयोः शिरसि ताडित्वा। मायानट्याः वस्त्रं पाटयति ॥६॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी । मान ईरखा चित से टारी ॥७॥	कामक्रोधलोभाश्च विकारान्। मानेर्ष्यां च चित्तात् निवारयति ॥७॥
प्रेम भरी सखियन को सँग ले । तन मन धन सब गुरु पर वारी ॥८॥	प्रेम्णापूर्णा सखीभिः साधर्म्। तनमनधनसर्वे गुरौः समर्पितम् ॥८॥
बाचक जोगी ज्ञानी करमी । स्वाँग बना मोहे नर नारी ॥९॥	वाचकयोगीज्ञानीकर्मशीलाः। स्वाँगं कृत्य आकर्षयति जनान् ॥९॥
पंडित भेख शेख़ रोज़गारी । जम दूतन के धक्के खा री ॥१०॥	पंडितपाषण्डीशेखवृत्तिपरकाः। यमदूतैः धक्कयन्ति ॥१०॥
मेरा भाग जगा गुरु किरपा । पाय गई निज सरन अधारी ॥११॥	मम भागः जागृतः गुरुकृपया। प्राप्ता मया शरणाधारः ॥११॥
प्रेम दान दीन्हा निज घर से । रा धा/धः स्व आ मी चरनन हुई दुलारी ॥१२॥	प्रेमदानं दत्तं निजगृहात् । रा धा/धः स्व आ मी चरणयोः प्रियाजाता ॥१२॥

शब्द - मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु	
हिंदी	संस्कृत
मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु । मेरी सुरत चुनरिया रँग दो ॥ १ ॥	मम प्रिय: रसिकः सद्गुरुः रज्यतु ममात्माच्छादनम् ॥ १ ॥
प्रेम सिंध तुम अगम अपारा । मोहि प्रेम दिवानी कर दो ॥ २ ॥	अगमापार: च प्रेमसिन्धस्त्वम् कुरु माम् प्रेमोन्मत्ता ॥ २ ॥
रँग भरे रँग ही बरसावो । मेरे मन की कलसिया भर दो ॥ ३ ॥	वर्षतु रङ्गमेव प्रेम्ण: रङ्गेनपूर्णः पूरयतु मम मनसः कलशम् ॥ ३ ॥
मन मोहन निज रूप तुम्हारा । मेरे हिये मुकर में धर दो ॥ ४ ॥	तव निजरूपं मनमोहनम् धरतु मम हृद्दर्पणे ॥ ४ ॥
मन माया से अलग बचा कर । मोहि अजर अमर धुर घर दो ॥ ५ ॥	पृथग् संरक्ष्य मनसः मायायाश्च देहि माम् अजरामरौ च गृहम् ॥ ५ ॥
बहु दिन बीते करत पुकारा । मेरी आसा पूरन कर दो ॥ ६ ॥	कुर्वनाह्वानं व्यतीतानि बहुदिनानि पुरयतु ममाशाम् ॥ ६ ॥
काल करम मोहि बहु भरमावत । पाँचों चोर पकड़ दो ॥ ७ ॥	भ्रमन्ति कालकर्माणि च बहु माम्। गृह्णातु पञ्चचौराः॥ ७ ॥
जित जाऊँ तित काल भुलावत । चरनन में चित मोर जकड़ दो ॥ ८ ॥	गच्छामि यत्र विस्मारयति कालः तत्र। दृढ़ं बध्नातु मम चित्तं चरणौ॥॥८॥
तुम दाता क्यों देर लगावो । अब तो जल्दी कर दो ॥ ९ ॥	कथं करोषि बिलम्बं दाता त्वम् क्षिप्रं कुरु अधुना ॥ ९॥
कहाँ लग कहूँ कहन नहिं आवे । माँगूँ सो मोहि बर दो ॥१०॥	वच्मि कियत् पर्यन्तं न वक्तुं क्षमः वरं देहि याचेऽहम् यो ॥ १० ॥
रा धा/ध: स्व आ मी प्रीतम प्यारे मोहि नित नित अपना सँग दो ॥ ११॥	प्रियतमप्रियाः रा धा/ध: स्व आ मी दयालवः । देहि स्व सानिध्यं प्रतिदिनम् ॥ ११ ॥

होली के दिन आये सखी	
हिंदी	संस्कृत
होली के दिन आये सखी । उठ खेलो फाग नई ॥१॥	सखि आगता: होलीदिवसा:। उत्थाय क्रीडतु फाल्गुननवः ॥१॥
दया धार आये सतगुरु प्यारे । प्रेम के रंग बही ॥२॥	दयां धार्य समागताः प्रियसद्गुरु:। प्रेम्णः रंगं प्रवहति ॥२॥
भक्ति दान फगुआ दिया सब को। प्रीति जगाय दई ॥३॥	भक्तिदानफाल्गुनदातः दत्तवंतः सर्वान्। प्रीतिं जागृतवान् ॥३॥
बिरह गुलाल अबीर तड़प का। मन पर डाल दई ॥४॥	विरहस्यरक्तचूर्णम् अबीरः व्याकुलतायाः। मनसि प्रक्षिप्तवान् ॥४॥
उमँग रंग भर भर अब घट में। गुरु पर छिड़क दई ॥५॥	उत्साहस्य रंग निक्षिप्य प्रतिघटं । गुरौं प्रसारितवान् ॥५॥
आओ सखी अब सोच न कीजे । चरनन लिपट रही ॥६॥	सखि आगच्छतु मा कुरु विचारम्। लिप्लिम्पति चरणयोः ॥६॥
दया दृष्टि अब सतगुरु डारी। अंतर भीज रही ॥७॥	दयादृष्टिः सद्गुरोः जातः। आर्द्रा भवति घटे ॥७॥
दरशन करत हुई मतवारी। सुध बुध बिसर गई ॥८॥	दर्शने उन्मत्ता जाता । विवेकशून्या जाता ॥८॥
नैनन की पिचकार छुड़ावत । तिल में उलट गई ॥९॥	नेत्रयोः प्रोक्षणी जायते। षड्चक्रे विपरीता जाता ॥९॥
सहसकँवल चढ़ जोत जगाई। संख बजाय रही ॥१०॥	सहस्रकमले ज्योतिः प्रकाशिताः। शंखवादनं करोति ॥१०॥
लाल गुलाल रूप गुरु देखा। त्रिकुटी जाय रही ॥११॥	गुरोःपाटल स्वरूपमपश्यत् त्रिकुटी स्थले गतवान् ॥११॥
चंद्र रूप लख निरखी गुफा। जहाँ मुरली बाज रही ॥१२॥	दृष्ट्वा चन्द्ररूपमपश्यद् गुहा यत्र भवति वेणुवादनम् ॥१२॥
सत्तलोक जाय पुरुष रूप लख। अचरज कौन कही ॥१३॥	सत्तलोके दृष्ट्वा पुरुषरूपम् विस्मयं वर्णितुं न शक्यते ॥१३॥

हंसन से मिल खेली होली। बीन बजाय रही ॥१४॥	हंसैः सह कृता होलिकाक्रीडा नदति अहितुण्डकवाद्यम् ॥१४॥
प्रेम रंग की बरषा कीनी। अमृत धार बही ॥१५॥	जाता प्रेमरंगस्य वृष्टिः अमृतधारा प्रवहति ॥१५॥
अलख अगम से भेंटा करके। रा धा/ध: स्व आ मी चरण पई ।।१६।।	अलखागमेन मिलित्वा रा धा/ध: स्व आ मीचरणयोः पतिता ।।१६।।
अचरज रूप निरख हिये दिरगन। छिन छिन रीझ रही ।।१७।।	अन्तश्चक्षुषाद्भुतरूपं दृष्ट्वा क्षणं क्षणं च सोऽऽकृष्टः ।।१७।।
अद्भुत शोभा रूप अनूपा। निरखत मगन भई।।१८।।	अद्भुतशोभा रूपमनूपम् दृष्ट्वा लीना जाता ।।१८।।
महिमा रा धा/ध: स्व आ मी बरनी न जाई। हिया जिया वार रही।।१९।।	रा धा/ध: स्व आ मीमहिमा वर्णितुमशक्या समर्पयति प्राणान् ।।१९।।
ऐसी होली खेल रा धा/ध: स्व आ मी से। अचल सुहाग लई ।।२०।।	खेल होलिका रा धा/ध: स्व आ मी दयालूना । अचलसौभाग्यं लीना ।।२०।।

होली खेल न जाने बावरिया	
हिंदी	संस्कृत
होली खेल न जाने बावरिया । सतगुरु को दोष लगावे ॥१॥	होलीखेलनाभिज्ञ: हतक: । उपालम्भति सद्गुरुम् ॥१॥
जगत लाज मरजाद में अटकी । घूँघट खोल न आवे ॥ २॥	जगत् मानमर्यादा च धृता । नावगुण्ठनं त्युक्तं पार: ॥ २॥
प्रेम रंग घट भरन न जाने । भरम गुलाल घुलावे ॥३॥	रागरंगेन घटं न पूर्णम् । भ्रमपाटले विलीन: ॥३॥
डगमग भक्ती चाल अनेड़ी । जग सँग झोके खावे ॥४॥	भक्तिरस्थिरा चलति प्रमत्त: । जगता याति पवनाघातम् ॥४॥
निंदा धूल से उड़ उड़ भागे । सतसँग निकट न आवे ॥५॥	निन्दारेणुना दूरी भवति । सत्संगं च नावस्पृशति ॥५॥
पाँच दुष्ट का रँग ले साथा । नित पिचकार छुड़ावे ॥ ६ ॥	पंचाहीनां वर्णै: साकम् नित्यं पिचकरीप्रयुक्ता ॥६॥
आदर मान भरा मन भीतर । दीन अंग नहिं लावे ॥ ७ ॥	आदरमान: जातः मनसि । न व्यवहरति दीनांगे ॥७॥
बचन सुने पर चित न समावे। छिन छिन काल भुलावे ॥ ८ ॥	श्रृणोति बचनं न तु चित्ते गृह्णाति । प्रतिक्षणं विस्मारयति काल: ॥ ८ ॥
मन माया ने जाल बिछाया। सब जिव नाच नचावे ॥ ९ ॥	मनमाया च जालं प्रसारितम् । जीवान् अनर्तयन् सर्वान् ॥ ९ ॥
दया करें सतगुरु मन मोड़ें। तो घर की राह पावे ॥१०॥	दयां धार्य सद्गुरुश्चेद् निवर्तयतु मन: । निजगृहस्य मार्गं प्राप्तं कुर्यात् तर्हि ॥१०॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन । रा धा/ध: स्व आ मी चरन समावे ॥११॥	प्रीतिप्रतीतिश्च वर्द्धयति प्रतिदिनम् । रा धा/ध: स्व आ मी चरणयो: लीन: ॥११॥